आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 15-02-2016 ● अंक-435 ● तारीख - 16 फरवरी 2016, माघ शुक्ल पक्ष - 09 ● मंगलवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

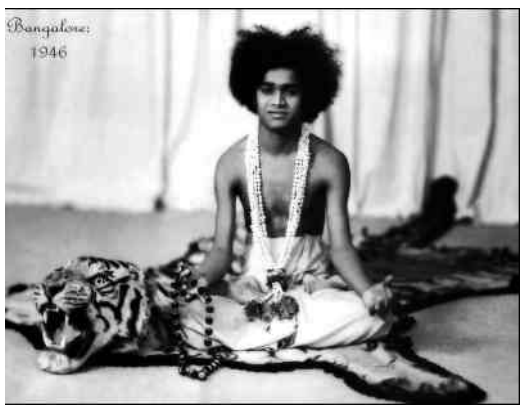

भगवान उनकी मौजूदगी की घोषणा नहीं करता है या दरवाजा नहीं पीटता! वह तो बस इंतजार करता है! जैसे ही तुम थोड़ा–सा दरवाजा खोलते हो, सूरज की रोशनी तुरंत भीतर से अंधेरे को बाहर कर देती है। इसलिए जब भी भगवान से मदद मांगी जाती है, वह आपकी ओर सहायता के लिए हाथ बढ़ाए मौजूद होता है।

वाट्स एप से....

दुनियां से बात करने के लिये,
फोन की जरूरत होती है।
और प्रभु से बात करने के लिये,
मौन की जरूरत होती है।।
फोन से बात करने पर बिल देना पड़ता है ,
और ईश्वर से बात करने पर,
दिल देना पड़ता है।
"माया" को चाहने वाला, "बिखर" जाता है."
भगवान को चाहने वाला, "निखर" जाता है..

नीति के श्लोक

यस्यांके च विभाति
भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च
गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषणः
सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री
शंकरः पातु माम्।।1।।

भावार्थ–जिनकी वाम भाग में हिमाचलसुता पार्वतीजी, मस्तक पर गंगाजी, ललाट पर द्वितीया का चन्द्रमा, कंठ में हलाहल विष और वक्षःस्थल पर सर्पराज शेषजी सुशोभित हैं, वे भस्म से विभूषित, देवताओं में श्रेष्ठ, सर्वेश्वर, संहारकर्ता (या भक्तों के पापनाशक), सर्वव्यापक, कल्याण रूप, चन्द्रमा के समान शुभ्रवर्ण श्री शंकरजी सदा मेरी रक्षा करें।

अनमोल वचन

1. आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत, असफलता नामक बीमारी को मारने के लिए सबसे बढिया दवाई है। ये आपको एक सफल व्यक्ति बनाती है।
2. देश का सबसे अच्छा दिमाग, क्लास रूम की आखरी बेंच पर भी मिल सकता है।
3. आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर आप अपनी आदतें बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देगी।

– डॉ. अब्दुल कलाम

22 फरवरी को आयोजित होगा बेणेश्वर धाम का मेला

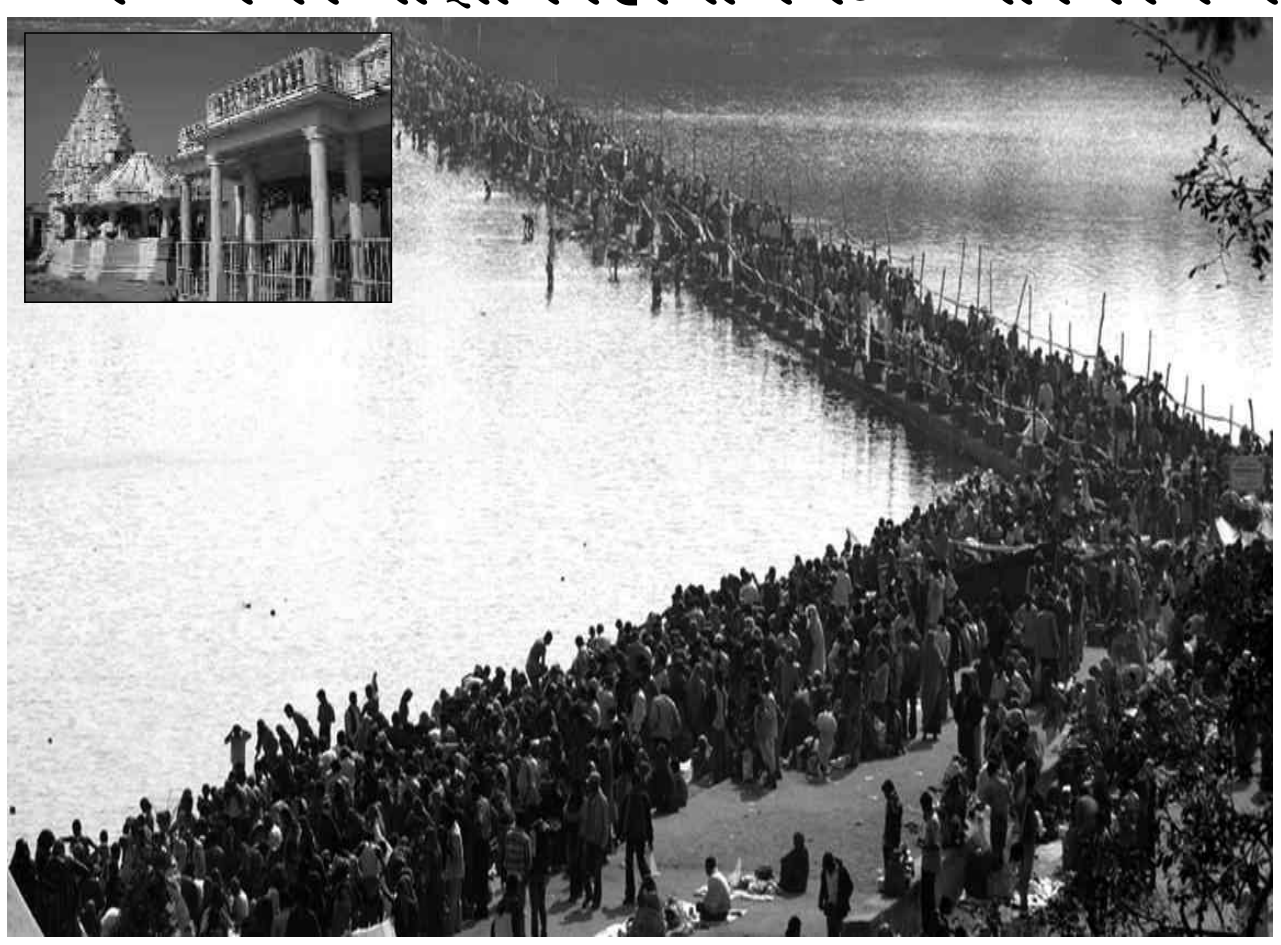

बेणेश्वर धाम पर 22 फरवरी को आयोजित मेले को लेकर तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही हैं। धाम पर दुकानें सजने लगी हैं। मेले को लेकर बेणेश्वर धाम जाने वाले साबला, बांसवाड़ा व वलाई पुल पर रेलिंग लगाने का कार्य पूरा हो चुका है। नदियों के किनारों पर सूचना बोर्ड भी लगा दिए गए हैं। इधर राज्य के साथ ही मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात के व्यापारियों के आने का क्रम शुरू हो गया है तथा कई व्यापारियों ने अपनी दुकाने सजाना शुरू कर दिया है। मेले का उदघाटन 18 फरवरी को दोपहर 12 बजे महंत अच्युतानंद महाराज के सानिध्य में होगा। उदघाटन के मौके पर माव जन्मोत्सव के साथ ध्वजारोहण होगा। मुख्य मेला 22 व 23 फरवरी को आयोजित होगा। मेले में भजनकीर्तन, महाआरती, प्रवचन होंगे। साथ ही 23 फरवरी को पदयात्रा निकाली जाएगी।

भगवतार्थ निर्णय

श्रीमद् भगवत् ग्रन्थ तो श्री वल्लभाचार्य का सर्वस्व है। इसे आप वेदरूपी कल्पवृक्ष का सरस फल मानते हैं। गो. विट्ठलनाथजी का कथन है कि श्रीमद् भागवत अमृत का समुद्र है, जिसका मंथन करके श्री वल्लभाचार्य ने उसके गूढार्थ रूप अमूल्य रत्नों को प्रकट किया है। श्री वल्लभाचार्य भागवत को सर्वोद्धारक भगवान् श्रीकृष्ण का ही रूप मानते हैं। इसमें व्यासजी ने अपनी समाधि भाषा में परम तत्त्व का निरूपण एवं प्रभु की लीला की दिव्य अनुभूतियों को प्रकट किया है। इसमें श्रुतियों के सारभूत सिद्धांतों का समावेश है।

श्री वल्लभाचार्य ने भागवत् के सात प्रकार के अर्थ प्रकट किये हैं। ये हैं–

(1) शास्त्रार्थ–सम्पूर्ण भागवत् शास्त्र का अर्थ
(2) स्कन्धार्थ –प्रत्येक स्कंध का अर्थ
(3) प्रत्येक अध्याय का अर्थ
(4) प्रत्येक प्रकरण का अर्थ
(5) प्रत्येक श्लोक का अर्थ
(6) प्रत्येक पद (शब्द) का अर्थ और
(7) प्रत्येक अक्षर का अर्थ।

आपका मत है कि ये सातों अर्थ परस्पर अविरोधी हैं तथा एक ही भाव को पुष्ट करते हैं। इनमें से आरंभ के चार अर्थ भागवतार्थ प्रकरण में दिये गये हैं और बाद वाले तीन अर्थ आपने अपनी भागवत–सुबोधिनी टीका में प्रस्तुत किये हैं।

शुभता प्रदान करते हैं गणपति

जब भी हम कोई शुभ कार्य आरंभ करते हैं, तो कहा जाता है कि कार्य का श्री गणेश हो गया। इसी से भगवान श्री गणेश की महत्ता का अंदाजा लगाया जा सकता है। जीवन के हर क्षेत्र में गणपति विराजमान हैं। पूजा–पाठ, विधि–विधान, हर मांगलिक– वैदिक कार्यों को प्रारंभ करते समय सर्वप्रथम गणपति का सुमिरन करते हैं।

श्री गणेश जी की पूजा प्रत्येक शुभकार्य करने के पूर्व श्री गणेशायनमः का उच्चारण किया जाता है। क्योंकि गणेश जी की आराधना हर प्रकार के विघ्नों के निवारण करने के लिए किया जाता है। क्योंकि गणेश जी विघ्नेश्वर हैंः–

विवाह की एवं गृह प्रवेश जैसी समस्त

विधियों के प्रारंभ में गणेश पूजन किया जाता है। पत्र अथवा अन्य कुछ लिखते समय सर्वप्रथम श्री गणेशाय नमः, श्री सरस्वत्यै नमः ,श्री गुरुभ्यो नमः ऐसा लिखने की प्राचीन पद्धति थी। ऐसा ही क्रम क्यों बना? किसी भी विषय का ज्ञान प्रथम बुद्धि द्वारा ही होता है व गणपति बुद्धि दाता हैं, इसलिए प्रथम श्री गणेशाय नमः लिखना चाहिए।

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा

हिन्दू धर्म में भगवान श्री गणेश का अद्वितीय महत्व है। यह बुद्धि के अधिदेवता विघ्ननाशक है। 'गणेश' का अर्थ है– गणों का स्वामी। हमारे शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां तथा चार अंतःकरण हैं तथा इनके पीछे जो शक्तियां हैं, उन्हीं को चौदह देवता कहते हैं।

ज्ञानी बुरे कर्मो में लिप्त नहीं होते

हमारे अध्यात्मिक दर्शन के कुछ विद्वान आत्मा को परमात्मा का अंश मानते हैं तो कुछ आत्मा को ही परमात्मा मानते हैं। इस तरह की राय में भिन्नता के बावजूद यह एक सत्य बात है कि आत्मा अत्यंत शक्तिशाली तत्व है जिसे समझने की आवश्यकता है। दरअसल जो लोगों के माध्यम से इंद्रियों और आत्मा का संयोग करते हैं, वही जानते हैं कि तत्वज्ञान क्या है और उसको सहजता से कैसे जीवन में धारण किया जा सकता है। आत्मा और परमात्मा में भेद करने से अच्छा है कि अपनी आत्मा को पहचानने और उससे अपनी इद्रियों को संयोजन का प्रयास किया जाये।

पंचतत्वों से बनी इस देह का संचालन आत्मा से ही है, मगर उसे इसी देह में स्थित इंद्रियों की सहायता चाहिए। आत्मा और देह के संयोग की प्रक्रिया का ही नाम योग है। मूलतः आत्मा शुद्ध है क्योंकि वह त्रिगुणमयी माया से बंधी नहीं है, पर पंचेंद्रियों के गुणों से ही वह संसार से संपर्क करता है और बाह्य प्रभावों का उस पर प्रभाव पड़ता है।

आखिर इसका आशय क्या है? पतंजलि विज्ञान के इस सूत्र का उपयोग क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर तभी जाना जा सकता है, जब हम इसका अध्ययन करें। अक्सर ज्ञानी लोग कहते हैं कि 'किसी बेबस, गरीब, लाचार, तथा बीमार या बेजुबान पर अनाचार मत करो तथा 'किसी असहाय की हाय मत लो क्योंकि उनकी बद्दुआओं का बुरा प्रभाव पड़ता है। यह सत्य है क्योंकि किसी लाचार, गरीब, बीमार और बेजुबान पशु पक्षी पर अनाचार किया जाये तो उसका आत्मा त्रस्त हो जाता है। भले ही वह स्वयं दानी या महात्मा न हो चाहे उसे ज्ञान न हो या वह भक्ति न करता हो पर उसका आत्मा उसके इंद्रिय गुणों से ही सक्रिय है यह नहीं भूलना चाहिए। अंततः वह उस परमात्मा का अंश है और अपनी देह और मन के प्रति किये गये अपराध का दंड देता है।

मनुष्य जब बुद्धि और मन के अनुसार अनुचित कर्म करता है तो भी उसका आत्मा त्रस्त हो जाता है। भले ही जिस बुद्धि या मन ने मनुष्य को किसी बुरे कर्म के लिये प्रेरित किया हो पर अंततः वही दोनों आत्मा के भी सहायक हैं जो शुद्ध है। जब बुद्धि और मन का आत्मा से संयोग होता है तो वह जहां अपने गुण प्रदान करते हैं तो आत्मा उनको अपनी शुद्धता प्रदान करता है। इससे अनेक बार मनुष्य को अपने बुरे कर्म का पश्चाताप होता है। यह अलग बात है कि ज्ञानी पहले ही यह संयोग करते हुए बुरे काम में लिप्त नहीं होते पर अज्ञानी बाद में करके पछताते हैं। नहीं पछताते तो भी विकार और दंड उनका पीछा नहीं छोड़ते।

कैसे मनुष्य के समीप लक्ष्मी स्वयं चली आती है?

''उद्योगिनं पुरूषसिंहमुपैति लक्ष्मीः''

उद्योगी (प्रयत्नशील या पुरूषार्थी) मनुष्य के समीप लक्ष्मी आती है– यहाँ लक्ष्मी के वरण का मुख्य गुण बताया गया है, उसके साथ सहयोगी गुणों की आवश्यकता भी होती है, उद्योग तो होना ही चाहिये, साथ ही समाज का अध्ययन भी होना चाहिये, समाज की माँग क्या है? उसे आकर्षित कैसे किया जाय? अपने श्रम, कला या उत्पादन का विनिमय कब कहाँ कैसे किया जाय? आदि बातों की जानकारी, अवसर की परख, धैर्य आदि गुण भी जरूरी हैं, इनसे व्यक्ति के समीप लक्ष्मी स्वयं चली जाती है।

साभार– स्वामी सत्य भक्त जी

हमारी उगलियां और ज्योतिष

ज्योतिष विद्या के अनुसार बारहों राशियों का स्थान प्रत्येक उँगली के तीन पोरों (गाँठों) में इस प्रकार होता है–

कनिष्का – मेष, वृष, मिथुन
अनामिका – कर्क, सिंह, कन्या
मध्यमा – तुला, वृश्चिक, धनु
तर्जनी – मकर, कुंभ, मीन।

शरीर का निर्माण पाँच तत्वों से हुआ है– अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी और जल। इसका भी निवास क्रमशः अँगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका एवं कनिष्ठा में माना जाता है।

मानव मन के बोल

अटूट बन्धन रिश्तों के

उठी न लक्ष्मण की आंखें, झकड़ी रही पलक पांखे
किन्तु कल्पनाहटी नहीं, अदित उर्मिला घटी नहीं।
खड़ी हुई अन्तस्थल में,
पूछ रही थी, पल–पल में, मैं क्या करूं
चलूं कि रहूं, लक्ष्मण ने सोचा की अहो!
कैसे कहुं चलो कि रहो।

साकेत का, उर्मिला जी के, और लक्ष्मण के अन्तःर्मन की बातें हो रही बाबू.... अन्तर मन में सद्भाव जगेंगे लाला, बाबू, मेरे ताऊजी साहब आदरणीय भुआजी, फूफा जी, छोटे भय्या, बडे भय्या। मंजले भय्या। कि अन्तर मन में सद्भाव जगते हैं। तो उर्मिला जी के हृदय में लक्ष्मण जी प्रकट होकर वार्तालाप करने लगते हैं। इतना अटूट प्रेम, जैसे चैन राज जी लोढ़ा के साथ भगवान ने मेरा करवाया, कहां घाणेराव, कहाँ बोम्बे, कहाँ चैनराज जी साहब, कहाँ कैलाश मानव, कहाँ प्रशान्त भय्या, कहाँ कमला जी, ऐसा लगा कि जैसे पूर्व जन्मों के सम्बन्ध मिल गये हों। बहुत जीवन में बातें हुई हैं। तो लक्ष्मण जी के जीवन के बारे में बात कर रहा था–साकेत की, कि लक्ष्मण जी को उर्मिला ने कहा कि मैं क्या करूं चलूं या रहूं ? चौदह साल के लिये आप वनवास जा रहे हैं। आप तो राम जी के चरण के पीछे हो गये। सीता माताजी मेरी बड़ी बहिन ने भी कह दिया सुख में आ.. आ.. कर घेरूं, संकट में अब मुंह फेरन। देखेगा तो कौन–किसको मरना होगा मौन जिसे।

जो गौरव लेकर शामिल होते हो कानन गामी, उसमें
अर्द्धभाग मेरा, करो ना आज त्याग मेरा। सीता जी को
भी आदेश मिल गया। पर उर्मिला जी,
लक्ष्मण जी ने कहा,
यदि तुम भी प्रस्तुत होगी, तो संकोच, सोच दोगी।
प्रभुवर बाधा पायेंगे, छोड मुझे भी जायेंगे।
नहीं–नहीं यह बात ना हो, रहो रहो, हे प्रिय रहो।
यह भी मेरे लिये सहो, और अधिक क्या कहूं कहो।
लक्ष्मण हुए वियोग जई, और उर्मिला प्रेम बहि, वह भी
सब कुछ जान गई। विवश भाव से मान गई।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

माँ ने बच्चे को भेजा, मिठाई लाने। बात पुराने जमाने की है न : सो उस समय कहा गया –''देख बेटा, फीकी मिठाई न ले आना, मिठी देखकर लाना। एक जगह नहीं तीन–तीन जगह। बच्चे ने कहा ''नहीं–नहीं यह तो फीकी है।'' चौथा हलवाई बुद्धिमान था, – पूछा बेटा ''मुन्ने मुँह में कुछ रख तो नहीं रखा पहले से ?'' और बच्चे के मुख से निकली ठंडाई की मीठी गोली, जिसे चूसता जा रहा था और चखता भी जा रहा था मिठाई।

आदरणीय महानुभावों, सन्त श्री के मुख से सुना है–''स्वच्छ पानी से भरने के लिए अपने हृदय रूपी घड़े का गंदा पानी खाली तो कीजिये। कुछ पाने के लिए थोड़ा तो दीजिये।''

जी हाँ, सत्संग रूपी जन हितकारी बातों को सन्तों ने नाना प्रकार से कहा है, कई तरीकों से। कभी मीठे केप्सूल के खोल में कड़वी दवाई सरीखा – कभी कहानी में –कभी कविता में।

बार–बार मन में आता था, हमारे बच्चे भी ऋषि दधीचि का त्याग, राजा हरिशचन्द्र की सत्य निष्ठा, शबरी की प्रभु भक्ति जानना चाहते हैं, देखना चाहते हैं। किसी कोने से आवाज आती थी –''अरे भाई आजकल किसको सुहाती है ये चीजें, परन्तु वाह! रामायण जो दिखाई जा चुकी और महाभारत जो देख रहे हैं, उनकी इस लोकप्रियता ने यह सिद्ध कर दिया कि मानव समाज की असली भूख है :–

अच्छाई–अच्छाई अच्छाई।

आइये, हम भी फूलों के बीज बिखेरें–उस रेल यात्री की तरह जो यात्रा करते हुए खिड़की के बाहर बीज डालता हुआ प्रसन्न मन से सोच रहा था–कुछ तो उगेंगे। मैं नहीं तो क्या जो देखेगा वह तो राजी होगा ही।

577 महिलाओं को बांटे राशन किट

उदयपुर 'नारायण सेवा संस्थान' द्वारा शहर व आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की गरीब व विधवा महिलाओं को निःशुल्क राशन वितरण के मासिक प्रकल्प के तहत 577 महिलाओं को राशन किट वितरित किए गए। निदेशक वन्दना अग्रवाल ने बताया कि राशन किट में परिवार के सदस्यों के अनुपात में आटा, दाल, चावल, तेल, मिर्च–मसाला, शक्कर, चाय पत्ती शामिल है।

खुश रहने का राज

(प्रेरणास्प्रद कहानी)

एक समय की बात है, एक गाँव में एक ऋषि रहते थे। लोग उनके पास अपनी कठिनाईयां लेकर आते थे और ऋषि उनका मार्गदर्शन करते थे। एक दिन एक व्यक्ति, ऋषि के पास आया और ऋषि से एक प्रश्न पूछा। उसने ऋषि से पूछा कि "गुरुदेव मैं यह जानना चाहता हुईं कि हमेशा खुश रहने का राज क्या है। ऋषि ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ जंगल में चलो, मैं तुम्हे खुश रहने का राज बताता हूँ।

ऐसा कहकर ऋषि और वह व्यक्ति जंगल की तरफ चलने लगे। रास्ते में ऋषि ने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उस व्यक्ति को कह दिया कि इसे पकड़ो और चलो। उस व्यक्ति ने पत्थर को उठाया और वह ऋषि के साथ–साथ जंगल की तरफ चलने लगा।

कुछ समय बाद उस व्यक्ति के हाथ में दर्द होने लगा लेकिन वह चुप रहा और चलता रहा। लेकिन जब चलते हुए बहुत समय बीत गया और उस व्यक्ति से दर्द सहा नहीं गया तो उसने ऋषि से कहा कि उसे दर्द हो रहा है। तो ऋषि ने कहा कि इस पत्थर को नीचे रख दो। पत्थर को नीचे रखने पर उस व्यक्ति को बड़ी राहत महसूस हुयी।

तभी ऋषि ने कहा – "यही है खुश रहने का राज।

व्यक्ति ने कहा – गुरुवर मैं समझा नहीं।

तो ऋषि ने कहा– जिस तरह इस पत्थर को एक मिनट तक हाथ में रखने पर थोडा सा दर्द होता है और अगर इसे एक घंटे तक हाथ में रखें तो थोडा ज्यादा दर्द होता है और अगर इसे और ज्यादा समय तक उठाये रखेंगे तो दर्द बढ़ता जायेगा। उसी तरह दुखों के बोझ को जितने ज्यादा समय तक उठाये रखेंगे, उतने ही ज्यादा हम दुःखी और निराश रहेंगे। यह हम पर निर्भर करता है कि हम दुखों के बोझ को एक मिनट तक उठाये रखते है या उसे जिंदगी भर। अगर तुम खुश रहना चाहते हो, तो दुःख रुपी पत्थर को जल्दी से जल्दी नीचे रखना सीख लो और हो सके तो उसे उठाओ ही नहीं।

बीकानेर के पर्यटन स्थल

लालगढ़ महल – नगर के बाहर की इमारतों में लालगढ़ महल बड़ा भव्य है। इस महल का निर्माण महाराजा गंगा सिंह ने अपने पिता महाराजा लालसिंह की स्मृति में बनवाया था। सारा का सारा महल लाल पत्थर का बना है, जिसपर खुदाई का बड़ा उत्कृष्ट काम है। भीतर के फर्श बहुधा संगमरमर के हैं। महल काफी विशाल है तथा इसमें सौ से अधिक भव्य कमरे हैं। महल के अहाते में मनोहर उद्यान बने हैं, जिनमें कहीं सघन वृक्षों, कहीं लताओं और कहीं रंग–बिरंगे फूलों से भरी हुई हरियाली की घटा दर्शनीय है। इस महल में महाराजा लालसिंह की सुन्दर प्रस्तर–मूर्ति खड़ी है। महल के एक भाग में तरणताल है। इस महल के भीतर एक पुस्तकालय है जिसमें कई हस्तलिखित पुस्तकों का संग्रह है। इस महल के दीवारों पर सुंदर चित्रकारी है।

नाल – बीकानेर से 8 मील पश्चिम में इसी नाम के रेलवे स्टेशन के निकट यह गांव है। इसके चारों ओर झाड़ियों और वृक्षों से अच्छादित सात–आठ छोटे–छोटे तालाब हैं। इसमें से एक तालाब के किनारे, जिसे केशोलय कहते हैं, एक लाल पत्थर का कीर्तिस्तंभ लगा है। यह 17 वीं शताब्दी का ज्ञात होता है। इसके लेख से यह ज्ञात होता है कि इसका निर्माण प्रतिहार केशव ने बनवाया था। दूसरा उल्लेखनीय लेख यहां के बाघोड़ा जागीरदार के निवास स्थान के द्वार पर लगा हुआ है जो 6 मई 1705 ई० रविवार का है। इसमें उक्त वंश के इन्द्रभाण की मृत्यु तथा उसकी स्त्री अमृतदे के सती होने का पता चलता है।

नाल से दो मील दक्षिण में एक स्थान है, जिसे नाल का कुआं कहते हैं। यहां सात लेख हैं जिनमें 6 तो 16 वीं शताब्दी तथा एक 17 वीं शताब्दी का हैं। उल्लेखनीय स्थलों में यहां के मंदिरों, दो कुओं और एक तालाब का नाम लिया जाता है। मंदिर सब एक ही स्थान में एक दीवार से घिरे हैं, जिनमें पार्श्वनाथ और दादूजी के मंदिर उल्लेखनीय है। दोनों लाल पत्थर के बने हुए है। पार्श्वनाथ की मूर्ति संगमरमर की है तथा नीचे एक लेख खुदा है। ये मंदिर १७वीं शताब्दी के बने है। इनके सामने जैसलमेर के पीले पत्थर की बनी हुई दो देवलियां है, जिनमें से एक पर अश्वारुढ़ पुरूष और सती की आकृतियां बनी हैं। इससे कुछ दूर चारदीवारी के पास एक सादे लाल पत्थर का कीर्तिस्तंभ लगा हुआ है।

कोड़मदेसर – बीकानेर से 15 मील पश्चिम में एक छोटा सा गांव है, जो इसी नाम के तालाब और उसके किनारे स्थापित भैरव की मूर्ति के लिए प्रसिद्ध है। भैरव की मूर्ति जांगलू में बसने के समय स्वंय राव बीका ने मंड़ोर से लाकर यहां स्थापित की थी। यहां पर 16 वीं तथा 17 वीं शताब्दी के चार लेख हैं। इनमें से सबसे प्राचीन लेख तालाब के पूर्व की ओर भैरव की मूर्ति के निकट के कीर्तिस्तंभ की दो ओर खुदा है। यह कीर्तिस्तंभ लाल पत्थर का है तथा इसके चारों ओर देवी–देवताओं की मूर्तियां खुदी है। इस लेख से पाया जाता है कि 1459 ई० में भाद्रपद सुदि को राव रिणमल के पुत्र राव जोधा ने यह तालाब खुदवाया और अपनी माता कोड़मदे के निमित्त कीर्तिस्तंभ स्थापित करवाया।

गजनेर – यह बीकानेर से लगभग 20 मील दक्षिण–पश्चिम में बसा है। यह महाराजा गजसिंह के समय आबाद हुआ था और बीकानेर राज्य के प्रसिद्ध तालाब गजनेर के नाम पर ही इसकी प्रसिद्धि है। यहां पर डूंगर निवास, लाल निवास, शक्त निवास और सरदार निवास नामक सुन्दर महल हैं। शीतकाल में बत्तखों, भड़तीतरों आदि के आ जाने के कारण कुछ दिनों के लिए यह उत्तम शिकारगाह बन जाता है। गजनेर के उद्यान में नारंगी और अनार के वृक्ष बहुतायत से हैं तथा कई प्रकार की सुंदर लताएं आदि भी हैं। तालाब का जल आरोग्यप्रद न होने के कारण इसका व्यवहार कम होता है। यहां पर निर्मित झील काफी सुंदर है। यह स्थल पूरे बीकानेर के सबसे सुंदर स्थलों में से एक है।

गोघृत से करें वातावरण शुद्ध

1. अग्नि में गाय के घी की आहुति देने से उसका धुआँ जहाँ तक फैलता है, वहाँ तक का सारा वातावरण प्रदूषण और आण्विक विकिरणों से मुक्त हो जाता है। मात्र 1 चम्मच गोघृत की आहुति देने से एक टन प्राणवायु (ऑक्सीजन) बनती है, जो अन्य किसी भी उपाय से संभव नहीं है।
2. गोघृत और चावल की आहुति देने से कई महत्त्वपूर्ण गैसें जैसे –इथिलिन ऑक्साइड, प्रोपिलिन ऑक्साइड, फॉर्मलडीहाइड आदि उत्पन्न होती है। इथिलिन ऑक्साइड गैस आजकल सबसे अधिक प्रयुक्त होनेवाली जीवाणुरोधक गैस है, जो शल्य – चित्किसा (ऑपरेशन) से लेकर जीवनरक्षक औषधियाँ बनाने तक में उपयोगी है।
3. मनुष्य–शरीर में पहुँचे रेडियोधर्मी विकिरणों का दुष्प्रभाव नष्ट करने की असीम क्षमता गोघृत में है।

हमारी बड़ीआंत (वृहदांत्र)

वृहदांत्र तीन भागों में विभाजित होता है– आरोही, अनुप्रस्थ एवं अवरोही भाग। अवरोही भाग मलाशय में खुलता है जो मलद्वार द्वारा बाहर खुलता है। आहार नाल की दीवार में ग्रसिका से मलाशय तक चार स्तर होते हैं, जैसे 1 सिरोसा, 2 मस्कुलेरिस, 3 सबम्यूकोसा और 4 म्युकोसा। सिरोसा सबसे बाहरी परत है और एक पतली मेजोथिलियम अंतरंग अंगों की उपकला और कुछ संयोजी ऊतकों से बनी होती है। मस्कुलेरिस प्रायः आंतरिक वर्तुल पेशियों एवं बाईं अनुदैर्घ्य पेशियों की बनी होती है। कुछ भागों में एक तिर्यक पेशी स्तर होता है। सबम्यूकोसा स्तर रुधिर, लसीका व तंत्रिकाओं युक्त मुलायम संयोजी ऊतक की बनी होती है। ग्रहणी में, कुछ ग्रंथियाँ भी सबम्यूकोसा में पाई जाती हैं। आहार नाल की ल्यूमेन की सबसे भीतरी परत म्यूकोसा है। यह स्तर आमाशय में अनियमित वलय एवं छोटी आंत में अंगुलीनुमा प्रवर्ध् बनाता है जिसे अंकुर कहते हैं। अंकुर की सतह पर स्थित कोशिकाओं से असंख्य सूक्ष्म प्रवर्ध् निकलते हैं जिन्हें सूक्ष्म अंकुर कहते हैं, जिससे ब्रस–बार्डर जैसा लगता है। यह रूपांतरण सतही क्षेत्र को अत्यधिक बढ़ा देता है।

अंकुरों में केशिकाओं का जाल फैला रहता है और एक बड़ी लसिका वाहिका होती है, जिसे लैक्टीयल कहते हैं। म्यूकोसा की उपकला पर कलश–कोशिकाएं होती हैं, जो स्नेहन के लिए म्यूकस का स्राव करती हैं। म्यूकोसा आमाशय और आंत में स्थित अंकुरों के आधरों के बीच लीबरकुन–प्रगुहिका भी कुछ ग्रंथियों का निर्माण करती है। सभी चारों परतें आहार नाल के विभिन्न भागों में रूपांतरण दर्शाती हैं।

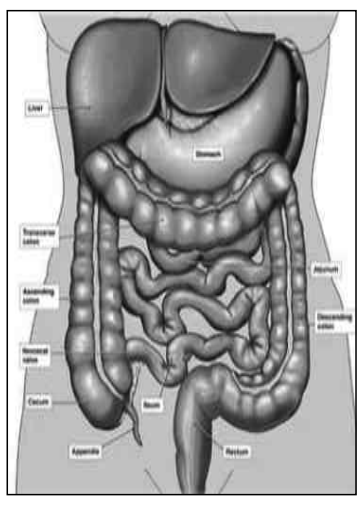

तेरे भिन्न प्रकार, तू एक ही है

पानी आकाश से गिरे तो.....बारिश,
आकाश की ओर उठे तो.....भाप,
अगर जम कर गिरे तो.....ओले,
अगर गिर कर जमे तो.....बर्फ,
फूल पर हो तो.....ओस,
फूल से निकले तो.....इत्र,
जमा हो जाए तो.....झील,
बहने लगे तो.....नदी,
सीमाओं में रहे तो.....जीवन,
सीमाएं तोड़ दे तो.....प्रलय,
आँख से निकले तो.....आँसू,
शरीर से निकले तो.....पसीना,
और
श्री हरी के चरणों को छू कर निकले
तो.....चरणामृत।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, लिण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, लिण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com